हमारी सदस्या रजनी तिलक को हमारी श्रद्धांजलि – WSS

(यौन हिंसा और राजकीय दमन के खिलाफ महिलायें)

WSS रजनी तिलक के जाने का गहरा शोक मनाता है, वे हमारी अमूल्य सदस्या थीं, हममें से बहुतों की मित्र थीं. रजनी एक धारदार दलित नारीवादी, एक अथक जाति-विरोधी योद्धा, और एक दलित लेखिका थीं. उनका जीवन, संघर्ष - व्यक्तिगत और राजनैतिक दोनों स्तरों के संघर्ष – का पर्याय था. वे हमसे ज्यादा ही जल्दी छीन ली गयीं, और अभी भी यह विश्वास कर पाना मुश्किल है कि वे अब हमारे बीच में नहीं हैं. सबसे महात्वपूर्ण, वे एक ऐसी अगुआ मार्गदर्शक थीं जिन्होंने आंदोलनों और राजनीती में – ख़ास तौर पर उत्तर भारत और दिल्ली में स्थित आंदोलनों और राजनीती में – जाति और पितृसत्ता के प्रश्नों को तब उठाया, जब शायद ही कोई और उठा रहा था. हम यहाँ तक भी कह सकते हैं कि इस क्षेत्र और शहर में, चूँकि जाति-उन्मूलन संघर्ष इतने लम्बे समय तक महिला समूहों और वामपंथी संगठनों में अदृश्य रहा, ये रजनी जैसी संघर्ष करने वालों के कारण ही था, कि इन अक्सर प्रतिकूल महौलों में इन प्रश्नों के लिए कुछ जगहें बन सकीं. इसके अलावा रजनी का जीवन बहुत ही कठिन परिस्थियों और संघर्षों से गुजरा - पहले उन्होंने अपने परिवार और भाई-बहनों की जिम्मेदारियों का बोझ एक एकल माँ के रूप में निभाया, और बाद में अपनी बीमार माँ की ज़िम्मेदारी भी, जिनकी देखभाल उन्होंने अंतिम दिनों तक बड़े धैर्य और दृढ़ता से की. बहुत सारी परिस्थियों में उनकी कुशाग्र बुद्धि और रणनीतिगत समझदारी, इन्ही विपरीत परिस्थियों में मजबूती और हिम्मत से डटे रहने से ही उपजी थी. हम उनके पूरे परिवार और दोस्तों को – जिन्हें वे पीछे छोड़ गयीं हैं – अपनी गहरी संवेदना प्रकट करते हैं, खासकर उनकी बेटी ज्योत्स्ना सिद्धार्थ को, जिसपर रजनी को बहुत गर्व था.

रजनी "राष्ट्रीय दलित महिला आन्दोलन", "NACDOR" (दलित संगठनों का राष्ट्रीय महासंघ), आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की एक यूनियन, "आह्वान" नाट्य मंच और "भारतीय दलित पैंथर" की दिल्ली शाखा की संस्थापक सदस्या थीं. वे "सेण्टर फॉर अल्टरनेटिव दलित मीडिया" की कार्यकारी निदेशक, "दलित लेखक संघ" की अध्यक्षा, और "अम्बेडकरवादी लेखक संघ" और "बामसेफ" की सदस्या थीं. उनके लेखन से – जिनमें उनकी आत्मकथा "*अपनी ज़मीन अपना आसमान*", उनकी कविता संग्रह "*पदचाप*" और "*हवा सी बेचैन युवतियाँ*", और उनकी हाल की बड़ी उपलब्धि – सावित्री बाई फुले के लेखों का मराठी से हिंदी में अनुवाद – शामिल थे; इनके माध्यम से हमने जाति, लिंग और महिला सशक्तिकरण की नयी समझदारियां प्राप्त कीं. उन्होंने काफी सांगठनिक मजबूती और क्षमताएं प्रदर्शित करते हुए, बड़ी संख्या में दलित महिलाओं और पुरुषों को रैलियों और मीटिंगों में गोलबंद किया. अपनी सार्वजनिक भाषणों में उन्होंने समझदारियों की सीमाओं को आगे धकेलते हुए, निरंतर नारीवादी समूहों और कार्यक्रमों में दलित महिलों की केवल प्रतीकात्मक उपस्थिति पर प्रश्न उठाया, वे सच्चाई को खुलकर बोलने से कभी नहीं कतरातीं थीं. "सहेली" में और बाद में WSS में, वे हमेशा दलित और मजदूर महिलाओं को बिलकुल आगे और केंद्र में रखतीं थीं, और ऐसा न कर पाने वाली नारीवादी राजनीती को व्यर्थ समझतीं थीं. उसी तरह, जाति-उन्मूलन राजनीती के नेतृत्व में रहते हुए, वे निस्संकोच जेंडर के प्रश्न को प्रमुखता से उठातीं थीं. WSS में उन्होंने जाति और पितृसत्ता के विशलेषण में बहुत बड़ा योगदान दिया, और हरियाणा में दलित महिलाओं के खिलाफ बढती हिंसा के सन्दर्भ में किये गए फैक्ट फाइंडिंग का नेतृत्व किया.

सबसे जीवनदायी, रजनी ने अपने नारीवादी और अम्बेडकरवादी आन्दोलनों की साथियों के साथ, परस्पर आलोचना और प्रगाढ स्नेह की राजनीती को व्यवहार में उतारा; वे एक चमत्कारिक सुस्पष्टता के साथ, जाति और जेंडर की गुंथी हुई और अलग-अलग काम करने की प्रक्रियाओं की जटिलताओं को चीरते हुए, हमेशा न्याय के लिए खडी होतीं थीं; और हमेशा वंचित पृष्ठभूमियों से आने वालीं कमउम्र युवतियों और ट्रांस व्यक्तियों के नेतृत्व को प्राथमिकता देतीं थीं. हम ऐसे अनेक मौके याद करते हैं जब रजनी ने, बिना कोई रहम बरते, बड़े दो-टूक और दृढ अंदाज़ में हमारी किसी परिस्थिति के विशलेषण को या उसकी चुनौतियों की समझदारी का डटकर विरोध किया. हम सबों से ज्यादा वे हरियाणा जैसे राज्यों के पुराने जाति-उन्मूलन आन्दोलनों के इतिहास से परिचित थीं, और हमें याद दिलातीं थीं कि एक समय पर देश के इस हिस्से में भी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया का एक आधार हुआ करता था. वे पहचानतीं थीं कि वर्त्तमान दौर में कैसे एक ओर तीव्र होते आर्थिक शोषण और दूसरी ओर, दलित आवाजों को समाहित करने पर तुले हिंदुत्व राजनीती के एजेंडे की दो-धारी कैंची के बीच लोग फंसे हुए हैं; वे ऐसे अंतर्विरोधों को बिलकुल सही परिपेक्ष में रख पातीं थीं. जैसा कि उन्होंने WSS द्वारा 2015 में दिल्ली में किये गए "जाति और पितृसत्ता कार्यशाला" में रेखांकित किया - दलितों को जिस प्रकार हिंदुत्व संगठनों में शामिल करने के तरीके अपनाये जा रहे हैं, वे कोई अनोखे-निराले नहीं हैं, हमें इस बारे में केवल और अधिक सतर्क होने की आवश्यकता हैं. बार-बार वे हम सब से ज़मीनी राजनीती के प्रति ज्यादा मज़बूत प्रतिबद्धता की मांग करतीं थीं, जो स्थानीय मुद्दों पर और मजदूर वर्ग के जीवन के साथ ज्यादा करीब से काम करे, और जनता की भाषा में काम करे.

हम इस बात का भी शोक मनाते हैं कि उनके अथक परिश्रम और कठिन ज़िन्दगी में खुद की परवा करने के लिए, जिसमे उनका अपना निजी स्वास्थ्य भी था, पर्याप्त जगह नहीं थी. हम ऐसे एक प्रतिबद्ध कार्यकर्ता को खो चुके हैं जिनके पास अभी देने के लिए, संघर्ष करने के लिए, और हम सब को जवाबदेह बनाने के लिए, बहुत साल बचे होने चाहिए थे. जब हम अपने जीवन और काम में रजनी के स्थान को याद करते हैं, WSS के सदस्यों के पास इतने सारे और विविध निजी यादें हैं – साथ मिलकर स्टेटमेंट तैयार करना, फैक्ट फाइंडिंग की चर्चा करना, उनका किसी काम के लिए अपने घर को इस्तेमाल करने का सुझाव देना, या फिर ज़रुरत के वक्त में बस .. मौजूद रहना - कि इस छोटी सी श्रद्धांजलि में उनके प्रति न्याय करना संभव नहीं है. WSS प्रतिबद्ध है, कि हम रजनी की राजनीती को आगे ले जायें, उसे अधिक व्यापक और अधिक गहरा बनायें; रजनी, हम आपके नेतृत्व, आपके मार्गदर्शन, आपकी आलोचना और आपके स्नेह की कमी हमेशा महसूस करेंगे.